MAINS MATRIX- अपने ज्ञान को एकीकृत करें, परीक्षा में सफलता पाएं

विषय सूची

1. **एक बहुध्रुवीय विश्व में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता**
2. **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने पर्यावरण अंकेक्षण नियम, 2025 को अधिसूचित किया है।**
3. **ट्रम्प ने कहा: अमेरिका ने भारत, रूस को 'सबसे अंधेरे' चीन के हवाले किया**
4. **पंजाब में बाढ़ क्यों आती है?**

1. एक बहुध्रुवीय विश्व में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता

लेखक: शशि थरूर

मूल अवधारणा: रणनीतिक स्वायत्तता

- **परिभाषा:** बाहरी दबावों या गठबंधन दायित्वों से बंधे बिना विदेश नीति और रक्षा के संबंध में संप्रभु निर्णय लेने की एक राष्ट्र की क्षमता।
- **यह क्या नहीं है:** अलगाववाद या तटस्थता।
- **इसका तात्पर्य:** लचीलापन, स्वतंत्रता और अपनी शर्तों पर कई शक्तियों के साथ जुड़ने की क्षमता।
- **भारत में ऐतिहासिक जड़ें:** एक स्वतंत्र भारत के दृढ़ संकल्प से पता लगाया गया है कि कभी भी दूसरों को दुनिया में अपना स्थान तय नहीं करने देंगे, नेहरू की गुटनिरपेक्षता से लेकर वर्तमान सरकार की "बहु-संरेणण" नीति तक।

वर्तमान वैश्विक संदर्भ

- **बदलाव:** एकध्रुवीय (अमेरिकी-प्रभुत्व वाला) विश्व व्यवस्था एक खंडित, बहुध्रुवीय और अस्थिर व्यवस्था में बदल गई है।
- **मुख्य कारक:**
    - चीन की मुखरता।
    - रूस की संशोधनवादी नीति।
    - पश्चिम के आंतरिक मतभेद।
    - वाशिंगटन की अप्रत्याशितता।
- **भारत के संरक्षण के लिए मूल हित:**

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS OUR COMMITMENT"

- क्षेत्रीय अखंडता।
- आर्थिक विकास।
- तकनीकी उन्नति।
- क्षेत्रीय स्थिरता।

प्रमुख शक्तियों के साथ भारत के संबंध

1. संयुक्त राज्य अमेरिका

- **संबंधों की प्रकृति:** नाटकीय रूप से गहरा हुआ; एक परिपक्व रणनीतिक साझेदारी।
- **सहयोग के क्षेत्र:**
  - रक्षा सहयोग और खुफिया साझाकरण।
  - संयुक्त सैन्य अभ्यास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण।
  - क्वाड और I2U2 जैसे समूहों में सदस्यता।
  - भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)।
  - चीन के उदय को लेकर साझी चिंताएं।
- **मतभेद के बिंदु:**
  - अमेरिकी व्यापार नीतियों और टैरिफ में अनियमितता।
  - रूस के साथ ऊर्जा/रक्षा सौदों को कम करने का दबाव।
  - पश्चिमी पदों के साथ और अधिक निकटता से जुड़ने का दबाव।
- **भारत का दृष्टिकोण (रणनीतिक स्वायत्तता कार्यरत):**
  - संलग्नता जारी रखना।
  - वैश्विक संघर्षों पर स्वतंत्र रुख बनाए रखना।
  - राष्ट्रीय हित की प्रधानता पर जोर देना।
  - अमेरिकी प्राथमिकताओं में शामिल होने से इनकार (अमेरिका-विरोधी नहीं)।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

2. चीन

- **संबंधों की प्रकृति:** एक जटिल चुनौती; एक साझेदार और प्रतिद्वंद्वी दोनों।
- **चुनौतियाँ:**
  - 2020 की सीमा झड़पों ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के भ्रम को तोड़ दिया।
  - तनाव अभी भी बना हुआ है।
- **अंतर्निर्भरताएं:**

- भारत के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक।
- क्षेत्रीय संस्थानों (जैसे, ब्रिक्स, एससीओ) में एक प्रमुख खिलाड़ी।

- **भारत का दृष्टिकोण (सतर्क संलग्नता और दृढ़ निवारक):**
  - सीमा बुनियादी ढांचे को मजबूत करना।
  - हिंद-प्रशांत भागीदारों के साथ संबंधों को गहरा करना।
  - स्वदेशी रक्षा क्षमताओं में निवेश करना।
  - चीन के नेतृत्व वाले बहुपक्षीय मंचों में भाग लेना (एक "कठिन लेकिन आवश्यक संतुलन बनाने की कार्यवाही")।

- **रणनीतिक स्वायत्तता का अर्थ:**
  - टकराव और आत्मसमर्पण दोनों का विरोध करना।
  - चीन के प्रति जवाबी-भार बनने से इनकार।
  - भारतीय अर्थव्यवस्था तक चीनी पहुंच को नियंत्रित करना।
  - संचार के चैनल खुले रखना।
  - यह मानते हुए कि प्रतिद्वंद्विता कूटनीति को रोकती नहीं है।

3. रूस

- **संबंधों की प्रकृति:** शीत युद्ध की एकजुटता, रक्षा सहयोग और साझा रणनीतिक हितों में निहित।
- **वर्तमान संदर्भ:** यूक्रेन-युद्ध के बाद वैश्विक अलगाव और बीजिंग के साथ रूस की निकटता से परखा गया।
- **भारत की कार्रवाई:**
  - संबंध बनाए रखना (तेल खरीदना, हथियार आयात करना, कूटनीतिक रूप से जुड़े रहना)।
  - पश्चिमी आलोचना के खिलाफ दृढ़ रुख।
- **रणनीतिक स्वायत्तता का अर्थ:**
  - एक द्विआधारी प्रतियोगिता में पक्ष चुनने से इनकार करना।
  - एक विदेश नीति तैयार करना जो भारत की unique भूगोल, इतिहास और आकांक्षाओं को दर्शाती है।
  - पुराने साझेदारियों को छोड़े बिना सैन्य आयात में विविधता लाना और स्वदेशी उत्पादन में निवेश करना।

भारत का रुख और व्यापक दृष्टिकोण

- **स्व-घोषणा:** "ग्लोबल साउथ की आवाज" - अविचलित, बहुलवादी और शक्तिशाली।
- **मार्गदर्शक सिद्धांत (विदेश मंत्री जयशंकर के अनुसार):** साझेदारी रुचि से तय होनी चाहिए, न कि भावना या विरासत में मिले पूर्वाग्रह से।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **अपनी कूटनीति की परिभाषा:** "रीढ़ की हड्डी के साथ कूटनीति" - मुखर, व्यावहारिक, बिना क्षमा के भारतीय, "पश्चिम-विरोधी" बने बिना "गैर-पश्चिम" बनने की इच्छा।
- **व्यापक प्रतिध्वनि:** यह रुख पूरे ग्लोबल साउथ में गूंजती है, जहां राष्ट्र एजेंसी और आवाज चाहते हैं, न कि महाशक्ति प्रतिद्वंद्विता में वशवर्तिता या संरेणण।

रणनीतिक स्वायत्तता की चुनौतियाँ

- **वैश्विक मुश्किलें:**
    - अंतर्निर्भर वैश्विक अर्थव्यवस्था।
    - कुछ खिलाड़ियों के वर्चस्व वाले तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र।
    - रक्षा आधुनिकीकरण के लिए साझेदारी की आवश्यकता।
    - जलवायु कूटनीति के लिए समन्वय की मांग।
- **घरेलू कारक:**
    - राजनीतिक ध्रुवीकरण।
    - आर्थिक कमजोरियां।
    - संस्थागत बाधाएं।
- **आधुनिक क्षेत्र:** स्वायत्तता अब तक विस्तारित होनी चाहिए:
    - साइबर खतरों तक।
    - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस युद्ध तक।
    - अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा तक।
    - डेटा संप्रभुता तक।
    - डिजिटल बुनियादी ढांचे तक।
    - आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा तक।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

निष्कर्ष और आगे का रास्ता

- **रणनीतिक स्वायत्तता है:** एक रणनीति, न कि केवल एक नारा। "कई ध्रुवों की दुनिया में नेविगेट करने की कला, उनमें से किसी एक के लिए पोल-वॉल्टिंग एक्रोबेट बने बिना।"
- **लक्ष्य:** एक ऐसा राष्ट्र बनाना जो इतना मजबूत, समृद्ध और technologically उन्नत हो कि उसकी स्वायत्तता स्वतः स्पष्ट हो और उसके विकल्पों का सम्मान किया जाए।
- **अंतिम मूल्यांकन:** भारत की रणनीतिक स्वायत्तता एक कार्य प्रगति पर है, लेकिन इसका पीछा करना इसके भविष्य के लिए आवश्यक है।

यूपीएससी मुख्य परीक्षा के लिए मुख्य बिंदु

1. जीएस पेपर II: शासन, संविधान, राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय और अंतर्राष्ट्रीय संबंध
यह विषय का सबसे प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण अनुप्रयोग है।

- **भारत और उसके पड़ोसी देशों के संबंध:**
    - यह लेख भारत के सभी प्रमुख पड़ोसियों और वैश्विक शक्तियों के साथ संबंधों का विश्लेषण करने का ढाँचा प्रदान करता है। रणनीतिक स्वायत्तता की अवधारणा का उपयोग निम्नलिखित को समझाने के लिए किया जा सकता है:
        - **चीन:** "सतर्क जुड़ाव और मजबूत निवारक" रणनीति बीआरआईसीएस/एससीओ में भागीदारी के साथ-साथ क्वाड और सीमा बुनियादी ढाँचे को मजबूत करने की नीति की व्याख्या करती है।
        - **पाकिस्तान:** किसी अन्य की प्राथमिकताओं (जैसे अमेरिका) के अधीन न होने का सिद्धांत सीमा-पार आतंकवाद से निपटने की भारत की द्विपक्षीय रुख की व्याख्या करता है।
        - **छोटे पड़ोसी देश (बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, मालदीव):** "शुद्ध सुरक्षा प्रदाता" के रूप में भारत की भूमिका और क्षेत्रीय संपर्क (जैसे पड़ोसी प्रथम नीति) में निवेश, रणनीतिक स्वायत्तता की रक्षा और अपने निकटवर्ती क्षेत्र में चीनी प्रभाव का मुकाबला करने के उपकरण हैं।
- **भारत और/या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और समझौते:**
    - यह अनुप्रयोग का एक मुख्य क्षेत्र है। भारत की विभिन्न समूहों में भागीदारी का गंभीरता से विश्लेषण करने के लिए लेख का उपयोग करें:
        - **क्वाड (अमेरिका, भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया):** एक गठबंधन नहीं बल्कि एक स्वतंत्र हिंद-प्रशांत में साझा हितों पर आधारित सुविधा की साझेदारी, जो "बहु-संरेणण" को पूरी तरह से दर्शाता है।
        - **बीआरआईसीएस और एससीओ:** चीन और रूस के नेतृत्व वाले इन मंचों के साथ जुड़ाव भारत को रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने, वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को उठाने और पश्चिम के साथ पूर्ण संरेणण से बचने की अनुमति देता है।
        - **आई2यू2 (भारत, इजराइल, यूएई, अमेरिका) और आईएमईसी:** मुद्दा-आधारित गठबंधनों के उदाहरण जो भारत के आर्थिक और रणनीतिक हितों की पूर्ति करते हैं without इसे एक औपचारिक गठबंधन में बाँधे।
        - **गुटनिरपेक्षता से बहु-संरेणण तक:** लेख नेहरू की गुटनिरपेक्षता से वर्तमान सरकार के बहु-संरेणण तक के बौद्धिक विकास को रणनीतिक स्वायत्तता के सर्वोच्च सिद्धांत के तहत प्रस्तुत करता है।
- **विकसित और विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का भारत के हितों पर प्रभाव:**
    - विश्लेषण करें कि कैसे प्रमुख शक्तियों की नीतियाँ भारत की स्वायत्तता के लिए अवसर और चुनौतियाँ पैदा करती हैं:
        - **अमेरिकी अप्रत्याशितता:** अमेरिकी व्यापार नीतियों या रूस के साथ संबंध तोड़ने की मांगों ने भारत की स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता की परीक्षा ली है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **चीन का आक्रामक रुख:** सीमा पर चीन की कार्रवाइयों ने भारत को अन्य देशों के साथ साझेदारी गहरी करने के लिए मजबूर किया है, जबकि आर्थिक रूप से जुड़े रहना जारी रखा है।
- **रूस का संशोधनवाद:** यूक्रेन युद्ध ने भारत को पश्चिमी दबाव और अपनी नैतिक स्थितियों के विरुद्ध रूस के साथ ऐतिहासिक रक्षा संबंधों को संतुलित करने के लिए मजबूर किया है।

जीएस पेपर IV: नैतिकता, सत्यनिष्ठा और अभिवृत्ति

- **अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता:**
  - यह अवधारणा नैतिक दुविधाओं के लिए एक उपजाऊ भूमि प्रदान करती है:
    - **दुविधा:** राष्ट्रीय हित (आर्थिक विकास में सहायता के लिए सस्ता रूसी तेल खरीदना) और वैश्विक मुद्दों (यूक्रेन में आक्रामकता की निंदा) पर नैतिक स्थितियों के बीच संतुलन बनाना।
    - **मूल्य:** यह नीति **व्यावहारिकता** (हित-आधारित), **न्यायपरायणता** (दबाव के खिलाफ खड़े होना), और **जिम्मेदारी** (अपने नागरिकों की आर्थिक भलाई के प्रति) का उदाहरण है।

2. पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने पर्यावरण अंकेक्षण नियम, 2025 को अधिसूचित किया है।

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने पर्यावरण अंकेक्षण नियम, 2025 को अधिसूचित किया है।
- **उद्देश्य:** केवल प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों पर निर्भरता से आगे बढ़कर पर्यावरणीय निगरानी और अनुपालन को मजबूत करना।

2. संबोधित की जाने वाली समस्या:

- मौजूदा निकाय—केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB), राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (SPCBs), और पर्यावरण मंत्रालय के क्षेत्रीय कार्यालय—अत्यधिक कार्यभार से दबे हैं।
- उन्हें मानवबल, संसाधनों, क्षमता और बुनियादी ढांचे में गंभीर अवरोधों का सामना करना पड़ रहा है।
- इसने भारत की परियोजनाओं और उद्योगों की विशाल संख्या में प्रभावी ढंग से निगरानी और अनुपालन लागू करने की उनकी क्षमता में बाधा उत्पन्न की है।

3. नए नियमों की मुख्य विशेषताएं:

- **मान्यता प्राप्त अंकेक्षकों की शुरूआत:** निजी एजेंसियों को अब पर्यावरण अंकेक्षक (chartered accountants के समान) के रूप में मान्यता दी जा सकती है।
- **अंकेक्षकों की भूमिका:** उन्हें मूल्यांकन करने के लिए लाइसेंस दिया जाएगा:
  - पर्यावरणीय कानूनों के साथ परियोजनाओं का अनुपालन।
  - प्रदूषण की रोकथाम, नियंत्रण और उन्मूलन में सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **व्यापक दायरा:** अंकेक्षण हरित क्रेडिट नियमों के अनुपालन को भी कवर करेगा, जहां स्थायी गतिविधियां व्यापार योग्य क्रेडिट उत्पन्न करती हैं।

4. व्यापक संदर्भ और आवश्यकता:

- पर्यावरण विनियमन सरल पुलिसिंग से आगे बढ़कर कार्बन अकाउंटिंग (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष उत्सर्जन को मापना) जैसे जटिल कार्यों तक विकसित हो गया है।
- ये जटिल कार्य पीसीबी अधिकारियों की वर्तमान क्षमता से परे हैं।

5. संभावित खतरा और सिफारिश:

- **जोखिम:** बड़े पैमाने पर, जटिल अंकेक्षण पर ध्यान केंद्रित करना जमीनी स्तर के उल्लंघनों (जिला, ब्लॉक, पंचायत स्तरों पर) की निगरानी की कीमत पर आ सकता है।
- **समाधान:** नए शासन को स्थानीय स्तर के अधिकारियों को प्रशिक्षण और संसाधनों के साथ सशक्त भी करना चाहिए ताकि उन "ज्वलंत पर्यावरणीय विडंबनाओं" को रोका जा सके जो वर्तमान में अनदेखी की जाती हैं।

यूपीएससी मुख्य परीक्षा पाठ्यक्रम में कैसे उपयोग करें

जीएस पेपर III: पर्यावरण और पारिस्थितिकी

- **संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और गिरावट:**
    - यह सबसे सीधा अनुप्रयोग है। यह लेख पर्यावरणीय शासन पर एक केस स्टडी है।
    - भारत में पर्यावरणीय कानूनों को लागू करने की चुनौतियों (जैसे, एसपीसीबी में क्षमता की कमी) पर चर्चा करने के लिए आप इसका उपयोग कर सकते हैं।
    - नए नियमों को भागीदारीपूर्ण शासन (निजी क्षेत्र को शामिल करके) के माध्यम से अनुपालन में सुधार के लिए एक नवीन नीतिगत उपाय के रूप में उद्धृत किया जा सकता है।
    - इसका उपयोग प्रदूषण नियंत्रण, सतत विकास और नीति एवं जमीनी परिणामों के बीच कार्यान्वयन अंतर से संबंधित उत्तरों में किया जा सकता है।
- **ईआईए और पर्यावरणीय शासन:**
    - ये नियम पर्यावरणीय मंजूरी के बाद की निगरानी तंत्र का परिचय देते हैं। यह पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए) चक्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो अक्सर कमजोर रहता है।
    - केवल अनुमोदन चरण को ही नहीं, बल्कि संपूर्ण ईआईए प्रक्रिया को मजबूत करने के लिए सुधारों का सुझाव देने हेतु इसका उपयोग करें।

जीएस पेपर II: शासन

- **शासन के महत्वपूर्ण पहलू, पारदर्शिता और जवाबदेही:**
    - यह नीतिगत बदलाव बेहतर शासन के लिए आउटसोर्सिंग और मान्यता की ओर एक कदम दर्शाता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- इसके पक्ष (दक्षता, विशेषज्ञता) और विपक्ष (निजी अंकेक्षकों के हितों का टकराव, जवाबदेही) पर चर्चा करें।
- यह सीमित राज्य क्षमता की शासन चुनौती को उजागर करता है और इसे हल करने के लिए एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल की खोज करता है।

- **लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका:**
  - लेख अंतर्निहित रूप से मौजूदा नियामक संस्थानों (एसपीसीबी) की क्षमता की आलोचना करता है।
  - प्रशासनिक सुधारों, क्षमता निर्माण और सरकारी निकायों को उनके मुख्य कार्यों को प्रभावी ढंग से करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर चर्चा करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है।

3. अमेरिका ने भारत और रूस को 'सबसे अंधेरे' चीन के हवाले कर दिया: ट्रम्प

संदर्भ

- पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिकी विदेश नीति की आलोचना करते हुए कहा कि अमेरिका ने भारत और रूस को चीन के "हवाले" कर दिया है।
- तियानजिन में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन के दौरान/बाद में अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (ट्रूथ सोशल) पर दिए गए बयान।

ट्रम्प के दावे

- भारत और रूस चीन के करीब जा रहे हैं।
- चीन को "सबसे अंधेरा, सबसे गहरा चीन" कहा।
- व्यक्त किया कि भारत, रूस और चीन का "एक लंबा और समृद्ध भविष्य एक साथ हो सकता है"।
- अमेरिका पर टैरिफ और व्यापार उपायों की आलोचना की जिनके कारण, उनके दावे के अनुसार, भारत "दूर हो गया"।

अमेरिकी प्रशासन की कार्रवाइयाँ / मुद्दे

- भारतीय सामानों पर लगाए गए टैरिफ (रूसी कच्चे तेल की खरीद जैसे आयातों पर 50% टैरिफ सहित)।
- यूक्रेन युद्ध के बाद भारत पर अपने रूसी ऊर्जा आयात को लेकर अमेरिकी रुख और दबाव।
- ट्रम्प के वाणिज्य सचिव (लुटनिक) ने भारत से "ब्रिक्स का हिस्सा बनना बंद करने" और पक्ष चुनने का आग्रह किया।

भारत की स्थिति

- विदेश मंत्रालय (MEA) ने सतर्कता के साथ जवाब दिया।
- कहा कि टैरिफ और ट्रम्प के बयान भारत की भूमिका की "गलत गणना" को दर्शाते हैं।
- इस बात की पुष्टि की कि भारत:

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।
- कई वैश्विक मंचों पर अमेरिका का साझेदार है।
- स्वतंत्र विदेश नीति के निर्णय जारी रखेगा।

- भारत कूटनीतिक संलग्नता को प्राथमिकता देते हुए, मौखिक हमलों पर "सोच-समझकर चुप्पी" बनाए हुए है।
- रूस-यूक्रेन युद्धविराम कूटनीति पर सक्रिय रूप से काम कर रहा है।

अंतर्निहित विषय

- **भारत की रणनीतिक स्वायत्तता:**
  - भारत द्विआधारी विकल्पों (अमेरिका बनाम चीन/रूस) में शामिल होने से इनकार करता है।
  - बहु-संरेणण रणनीति की निरंतरता।
- **अमेरिका-भारत तनाव:**
  - टैरिफ, व्यापारिक घर्षण और भारत के रूस संबंधों पर आलोचना।
- **चीन कारक:**
  - भारत के चीन की ओर बढ़ने की धारणा अतिरंजित है; वास्तविकता में, भारत-चीन संबंध तनावपूर्ण बने हुए हैं (सीमा तनाव, आर्थिक प्रतिबंध)।

4.पंजाब में बाढ़ क्यों आती है

संदर्भ

- पंजाब अपने सबसे बुरे बाढ़ का सामना कर रहा है।
- राज्य सरकार द्वारा सभी 23 जिलों को बाढ़ प्रभावित घोषित किया गया है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

प्राकृतिक कारक

1. **भूगोल:**
   - तीन सदाबहार नदियों द्वारा अपवाहित: रावी, ब्यास, सतलज।
   - मौसमी नदियाँ: घग्गर और कई छोटी नदियाँ।
   - समृद्ध जलोढ़ मिट्टी → पंजाब को उपजाऊ बनाती है (भारत के 20% गेहूं और 12% चावल का उत्पादन मात्र 1.5% भूमि से)।
2. **वर्षा और जलग्रहण क्षेत्र के मुद्दे:**
   - पंजाब और उर्ध्वप्रवाह हिमाचल/जम्मू-कश्मीर में भारी मानसूनी बारिश।
   - अत्यधिक वर्षा + बर्फ पिघलना → नदियों की क्षमता से अधिक जलस्तर।

- ऐतिहासिक बाढ़: 1988, 1993, 2019, 2023, 2025।

शासन और प्रबंधन के मुद्दे

1. **बांध प्रबंधन की समस्याएं:**
    - थीन (रणजीत सागर), पोंग, भाखड़ा बांध → पानी बहुत देर तक रोका जाता है, फिर अचानक बड़ी मात्रा में छोड़ा जाता है।
    - उर्ध्वप्रवाह और अनुप्रवाह अधिकारियों के बीच खराब संचार।
    - उदाहरण: माधोपुर बैराज गेट का टूटना → बाढ़ की स्थिति और खराब हुई।
2. **बीबीएमबी (भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड) के मुद्दे:**
    - केंद्र द्वारा नियंत्रित निकाय सिंचाई और बिजली को प्राथमिकता देता है, बाढ़ नियंत्रण को नहीं।
    - 2022 के संशोधन के बाद पंजाब अपने को अल्पप्रतिनिधित्व महसूस करता है (अधिक अखिल भारतीय अधिकारी शामिल)।
3. **ढूस्सी बंध (मिट्टी के तटबंध):**
    - बाढ़ के खिलाफ पहली पंक्ति का बचाव, लेकिन अवैध खनन और खराब रखरखाव से कमजोर।
    - पंजाब सरकार का अनुमान है कि मरम्मत के लिए ₹400-500 करोड़ की आवश्यकता है, लेकिन धन की कमी है।

जिलेवार प्रभाव (सरकारी आंकड़ों के अनुसार)

- गुरदासपुर – 1.45 लाख लोग प्रभावित, 40,169 हेक्टेयर फसल क्षेत्र प्रभावित।
- अमृतसर – 1.35 लाख लोग प्रभावित।
- कपूरथला, फाजिल्का, फिरोजपुर, तरन तारन, मानसा – अलग-अलग स्तर की तबाही।

बड़ी शासन समस्या

- विशेषज्ञों ने बार-बार आह्वान किया:
    - वैज्ञानिक बांध प्रबंधन (नियंत्रित जल मुक्ति, पूर्वानुमान)।
    - तटबंधों को मजबूत करना।
    - केंद्र, राज्य और स्थानीय अधिकारियों के बीच समन्वय।
- पर्यावरणविद:
    - "भारी बारिश प्राकृतिक है, लेकिन नुकसान मानवीय कुप्रबंधन से बढ़ जाता है।"

यूपीएससी मुख्य परीक्षा के लिए मुख्य बातें

1. पंजाब का भूगोल इसे बाढ़ के प्रति संवेदनशील बनाता है, लेकिन बांधों, तटबंधों का कुप्रबंधन और खराब समन्वय संकट को और बढ़ा देता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

2. जलवायु परिवर्तन वर्षा की परिवर्तनशीलता को बढ़ा रहा है, जिससे बाढ़ अधिक बार आ रही है।
3. सतत बाढ़ प्रबंधन के लिए आवश्यक है:
    - तटबंधों और जल निकासी में निवेश।
    - पारदर्शी बांध विनियमन।
    - जल प्रबंधन में सहकारी संघवाद।

जीएस पेपर 1 – भूगोल और समाज

- **भौतिक भूगोल:**
    - पंजाब रावी, ब्यास, सतलज + मौसमी नदियों द्वारा अपवाहित → बाढ़ के प्रति संवेदनशील।
    - जलोढ़ मैदान = उपजाऊ लेकिन अतिप्रवाह के प्रति संवेदनशील।
    - मानसून + हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में उर्ध्वप्रवाह वर्षा।
- **समाज पर प्रभाव:**
    - गाँव जलमग्न → 1.9 हज़ार गाँव प्रभावित, 3.8 लाख विस्थापित।
    - ग्रामीण आजीविका संकट: फसल विनाश (1.17 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि)।
    - मानवीय लागत: मौतें, पलायन, सामाजिक संकट।

जीएस पेपर 2 – राजनीति, शासन, संघीय मुद्दे

- **शासन की विफलताएं:**
    - खराब बांध प्रबंधन (देरी से जल मुक्ति, अचानक बाढ़)।
    - भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) की आलोचना → बिजली/सिंचाई पर ध्यान, बाढ़ नियंत्रण पर नहीं।
    - केंद्र, पंजाब सरकार और स्थानीय अधिकारियों के बीच कमजोर समन्वय।
- **संघीय मुद्दे:**
    - 2022 के संशोधन के बाद, बीबीएमबी के शीर्ष पद बाहरी लोगों के लिए खुले → पंजाब अपने को अल्पप्रतिनिधित्व महसूस करता है।
    - जल प्रबंधन में केंद्र बनाम राज्य की जिम्मेदारी पर विवाद।
- **आपदा शासन:**
    - कमजोर बाढ़ चेतावनी प्रणाली, संचार अंतराल।
    - उदाहरण: माधोपुर बैराज गेट का टूटना, थीन बांध से अचानक जल मुक्ति।

जीएस पेपर 3 – आपदा प्रबंधन, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण

- **आपदा प्रबंधन:**

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- ढूस्सी बंधों (मिट्टी के तटबंधों) का अपर्याप्त रखरखाव।
- अवैध खनन बाढ़ सुरक्षा को कमजोर करता है।
- तटबंधों को मजबूत करने के लिए ₹400-500 करोड़ के निवेश की आवश्यकता।

- **कृषि अर्थव्यवस्था:**
  - पंजाब 20% गेहूं, 12% चावल का उत्पादन करता है → राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को खतरा।
  - फसल विनाश किसानों की संकट और एमएसपी निर्भरता को बढ़ाता है।
- **पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन:**
  - जलवायु परिवर्तनशीलता → तीव्र वर्षा की घटनाएं बढ़ रही हैं।
  - वैज्ञानिक बाढ़ पूर्वानुमान के बिना बांधों पर अत्यधिक निर्भरता।

जीएस पेपर 4 – नैतिकता और शासन

- **शासन में नैतिक मुद्दे:**
  - जल मुक्ति के निर्णयों में पारदर्शिता की कमी।
  - केंद्र और राज्य संस्थानों के बीच जवाबदेही का अंतर।
  - बार-बार आपदाओं (1988, 1993, 2019, 2023, 2025) के बावजूद तटबंधों की उपेक्षा।
- **लोक प्रशासन में मूल्य:**
  - आपदा प्रबंधन में जिम्मेदारी, दूरदर्शिता और सहकारी संघवाद की आवश्यकता।
  - नैतिक शासन अनुप्रवाह लोगों की सुरक्षा के साथ सिंचाई/बिजली की जरूरतों को संतुलित करने की मांग करता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"